Patrika (Indore), 20th June 2026, Page – 14 (Front Page – 06)

रोजगार क्षमता, उद्योग जगत में प्रतिष्ठा और सस्टेनेबिलिटी में शानदार सुधार, विदेशी फैकल्टी और छात्रों की कमी अब भी बड़ी चुनौती

क्यूएस रैंकिंग में आइआइटी इंदौर 556 से 546वें स्थान पर आया

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. दुनिया की प्रतिष्ठित क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2027 में आइआइटी इंदौर ने अपनी स्थिति में सुधार करते हुए 556वें स्थान से छलांग लगाकर 546वां स्थान हासिल किया है। ओवरऑल स्कोर 2024 के 25.2 से बढ़कर 2027 में 30.1 तक पहुंच गया है। संस्थान ने रोजगार क्षमता, उद्योग जगत में प्रतिष्ठा,

अंतरराष्ट्रीय शोध सहयोग और सस्टेनेबिलिटी जैसे महत्वपूर्ण मानकों पर उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है। हालांकि विदेशी फैकल्टी, अंतरराष्ट्रीय छात्रों की कम भागीदारी और फैकल्टी-स्टूडेंट अनुपात में गिरावट जैसी चुनौतियां अभी भी संस्थान की वैश्विक रैंकिंग पर दबाव बना रही हैं।

रोजगार क्षमता बनी सबसे बड़ी ताकत : आइआइटी इंदौर का सबसे प्रभावशाली प्रदर्शन एम्प्लॉयमेंट आउटकम श्रेणी में रहा है। 2025 में जहां इस श्रेणी में संस्थान का स्कोर केवल 2.2 था, वहीं 2027 में यह बढ़कर 11.5 तक पहुंच गया। इसी तरह एम्प्लायर रेपुटेशन श्रेणी में भी आइआइटी इंदौर ने सुधार दर्ज किया है। 2024 में 4.3 का स्कोर 2027 में बढ़कर 18.4 तक पहुंच गया।

सस्टेनेबिलिटी में सबसे बड़ी उपलब्धि

पर्यावरणीय और सामाजिक-जिम्मेदारी को मापने वाली सस्टेनेबिलिटी श्रेणी में आइआइटी इंदौर ने सबसे बड़ी छलांग लगाई है। 2024 में जहां स्कोर मात्र 2 था, वहीं 2027 में यह बढ़कर 47.2 हो गया।

अकादमिक प्रतिष्ठा में धीरे-धीरे सुधार

वैश्विक शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं के बीच संस्थान की पहचान को दर्शाने वाले एकेडमिक रेपुटेशन स्कोर में भी वृद्धि हुई है। 2024 में 5.6 का स्कोर 2027 में बढ़कर 8 हो गया।

फैकल्टी और स्टूडेंट रेशो में दर्ज की गई गिरावट

इंटरनेशनल फैकल्टी रेशो 2024 में 2.3 था, जो घटकर 2027 में 1.2 रह गया। यानी विदेशी शिक्षकों की भागीदारी अपेक्षाकृत कम हुई है। इंटरनेशनल स्टूडेंट रेशो 2024 और 2025 में 1.1 था, जो 2026 और 2027 में केवल 1.3 तक पहुंच पाया। शिक्षा की गुणवत्ता का महत्वपूर्ण संकेतक माने जाने वाले फैकल्टी-स्टूडेंट रेशो में गिरावट दर्ज की गई है। 2024 में यह स्कोर 33.3 था, जो 2027 में घटकर 22.2 रह गया।